अध्याय-10

शहरी एवं ग्राम्य जीवन

आनंद के सवाल– आनंद पटना जिला के एक गांव अकबरपुर का रहनेवाला है । इसके पिताजी बिहटा की चावल मंडी से कल ही चावल बेचकर आए हैं। आज सुबह–सुबह उसके दादाजी धान काटने के लिए हसुआ को धार दिलवाने लोहार की भट्ठी गए । साथ में आनंद भी था। उसने भट्ठी और लोहार को देखकर पूछा–क्या लोहे के औजार के बिना आपकी खेती नहीं हो सकती ? दादाजी ! क्या आप मुझे बतायेंगे कि खेती करने में लोहे का उपयोग कब से शुरू हुआ ?तभी आनन्द की नजर भट्ठी पर आये उसके शिक्षक पर पड़ी । शिक्षक ने तपाक से उत्तर दिया–मैं तुम्हें इसके विषय में कल ही वर्ग में बतानेवाला हूँ ।
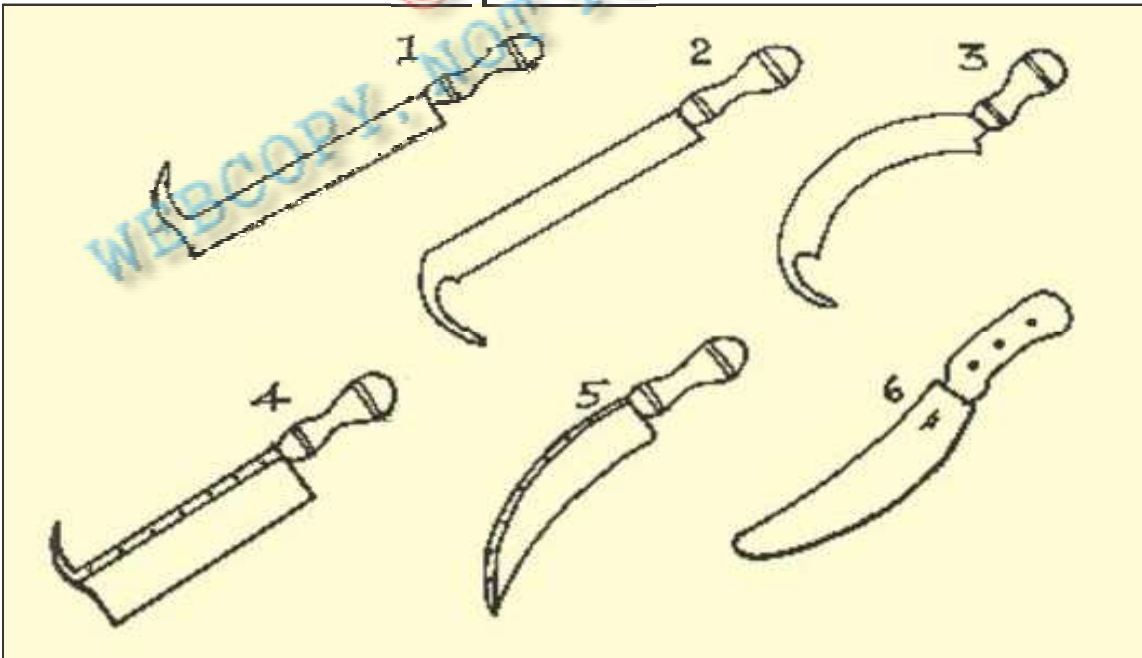
कृषि कार्य से जुड़े औजार

बच्चो ! पिछले अध्याय में हमने पढ़ा है कि मौर्य सम्राट अशोक के शासनकाल में मगध का साम्राज्य उत्कर्ष पर था। लोहे के प्रयोग ने कृषि एवं उत्पादन को बढ़ाया जिससे साम्राज्य की समृद्धि बढ़ी । लगभग 185 ई.पू. में अशोक के अक्षम उत्तराधिकारी एवं उनकी प्रशासनिक कमजोरियों की वजह से मौर्य साम्राज्य का पतन हो गया और उसकी एकता छिन्न–भिन्न हो गयी। परिणामस्वरूप देश के अन्दर कई छोटे–बड़े राज्य अस्तित्व में आ गए। मगध में शुंगवंश एवं कण्व वंश, दक्षिण में सातवाहन वंश एवं कलिंग में खारवेल राजवंश के शासन की शुरूआत हुई। इसी समय भारत में विदेशियों के भी कई आक्रमण हुए। पश्चिमोत्तर तथा उत्तर भारत के कई भागों में हिन्द यूनानियों का शासन स्थापित हुआ, तत्पश्चात् मध्य एशियाई शकों का शासन रहा। उनके बाद कुषाण वंश के शासकों ने यहां शासन किया। इसके विषय में हम विस्तार से अगले अध्याय में पढ़ेंगे ।

यद्यपि लगभग 200 ई.पू. से लेकर 300 ई. तक भारत में लगातार राजनैतिक परिवर्तन हो रहे थे, फिर भी यह काल कृषि एवं उद्योग के लिए काफी महत्वपूर्ण साबित हुआ। इस काल में कृषि का प्रसार, नए शहरों का विकास तथा उद्योग एवं व्यापार में अभूतपूर्व प्रगति हुई। एक तरफ व्यापारियों ने उपमहाद्वीप के अन्दर स्थल मार्ग की खोज की तो दूसरी तरफ पश्चिम एशिया, पूर्वी अफ्रीका तथा दक्षिण पूर्व एशिया के रास्ते भी खुले। इस अध्याय में आप मौर्योत्तर कालीन कृषि एवं व्यापार का अध्ययन करेंगे।
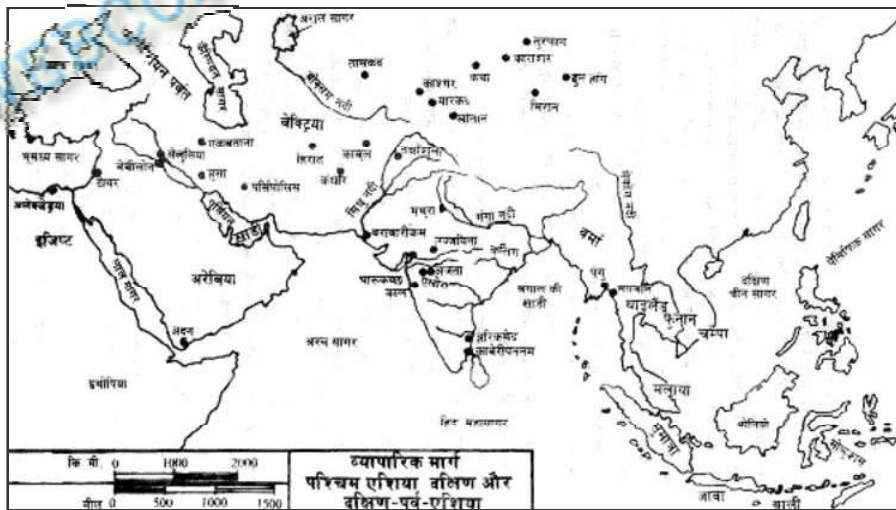
तत्कालीन भारत के व्यापारिक मार्ग

खेती का विकास :

खेती के विकास में लोहे के औजार का विशेष महत्व रहा है । वैसे तो आप पढ़ चुके हैं कि खेती का प्रारंभ हजारों वर्ष पहले लोगों ने शुरू कर दिया था लेकिन उत्पादन इतना अधिक नहीं था कि उसे लोग बाजार में जाकर बेच सकें और अपनी अतिरिक्त जरूरतों को पूरा कर सकें । मौर्यकाल में लोगों के द्वारा जो लोहे के औजार बनाए गए उससे खेती का काम तेजी से होने लगा । मौर्योत्तर काल में भी इसके विकास का क्रम जारी रहा । लोगों ने लोहे के कुल्हाड़ी से जंगल को साफ कर जमीन को खेती के लायक बनाया । लोहे के फाल से खेतों की जुताई आसानी से गहराई तक किए जाने लगे। ऐसा नहीं था कि पहले खेती के लिए जंगल को साफ नहीं किया जाता था लेकिन लोहे की जगह लकड़ी, पत्थर और कांसे के औजारों का प्रयोग होता था । खेती के विकास में लोहे के औजारों के साथ–साथ अधिरोपण तकनीक का भी विशेष महत्व था। जैसे–धान का बीज तैयार कर पुनः रोपने से उत्पादन में कई गुना वृद्धि हुई ।

सिंचाई की व्यवस्था :

हमारे यहाँ खेती शुरू से मॉनसून पर निर्भर है। अगर वर्षा होती है तो खेती होगी अन्यथा सूखा का सामना करना पड़ेगा ऐसी ही परिस्थितियां होती हैं। अतः खेती के लिए सूखे से निपटने हेतु प्राचीनकाल से ही प्रयास जारी है। उत्तर वैदिक काल में घटी यंत्र के प्रयोग (रेहट) का वर्णन है। यद्यपि सिंचाई हेतु नहरों, कुओं, तालाबों और कृत्रिम झीलों का उपयोग मौर्यकाल में भी होता था लेकिन उसके बाद के शासकों ने इसमें उत्तरोत्तर विकास किया जिससे उत्पादन में वृद्धि हुई ।

सुदर्शन झील के बारे में :

सुदर्शन झील का निर्माण सर्वप्रथम चन्द्रगुप्त मौर्य ने करवाया था । यह गुजरात में स्थित है । इस झील से सिंचाई के लिए नहरें निकाली गयीं । लेकिन चार सौ साल बाद आए भयंकर तूफान से इसके तटबंध टूट गए और उसका सारा पानी बह गया। इसकी जानकारी हमें रूद्रदामन नामक शासक के एक अभिलेख (जूनागढ़ अभिलेख)

से मिलती है। इसी अभिलेख से यह पता चलता है कि रुद्रदामन ने इसे दोबारा बनवाया । इस झील के तटबंधों को पहले की अपेक्षा तीन गुना अधिक मजबूत बनाया गया। रूद्रदामन अपने अभिलेख में यह भी जानकारी देता है कि इसके मरम्मत कार्य के लिए कोई अतिरिक्त कर या बेगार नहीं लिया गया। सारा खर्च सरकारी खजाने से किया गया। पुनः यह तीन सौ वर्षों बाद टूट गया जिसको बनवाने का कार्य बाद के गुप्तवंश का शासक स्कंदगुप्त ने किया ।

आप अपने शिक्षक की मदद से यह चर्चा करें कि आपके इलाके में सिंचाई के कौन–कौन से साधन उपयोग में आते हैं? क्या वे किसानों के खेतों की सिंचाई करने में पूर्ण रूप से सक्षम हैं ?क्या सिंचाई के उन साधनों से किसान सन्तुष्ट हैं?

खेती के विकास के फायदे :

सिंचाई एवं औजारों के प्रयोग से अनाज का उत्पादन बढ़ा । लोगों को खेती के कार्य में रोजगार मिला और साथ ही साथ उनकी मजदूरी भी बढ़ी । राजाओं द्वारा सिंचाई का प्रबन्ध किए जाने से एवं उत्पादकता बढ़ने से उन्हें पहले की अपेक्षा अधिक राजस्व प्राप्त होने लगा । राजा को अधिक धन की प्राप्ति ने उसे महल बनाने, सेना रखने एवं किला बनाने के लिए साधन उपलब्ध कराये । अधिक उत्पादन ने उद्योगों को भी प्रोत्साहन दिया। व्यापार का विकास इनका एक प्रमुख परिणाम था।

व्यापार :

इस काल में व्यापार एवं वाणिज्य का विकास बड़े पैमाने पर हुआ । व्यापार की प्रगति के लिए मौर्यकाल में ही कई स्थल मार्गों का निर्माण एवं विकास किया गया था । पाटलिपुत्र से तक्षशिला तथा पाटलिपुत्र से ताम्रलिपि (बंगाल) को जोड़ने वाली सड़कें स्थलीय व्यापार के महत्वपूर्ण साधन थे। मौर्योत्तर काल में दक्षिण भारत में व्यापारिक मार्गों का विकास हुआ। कुछ व्यापारिक मार्ग मध्य एशिया और पश्चिम एशिया से भी जुड़े हुए थे। उत्तर–पश्चिम भारत में हिन्दुस्तानी शक कुषाण आदि शासकों के राज्य स्थापित होने से उपमहाद्वीप का

पश्चिमी एवं मध्य एशिया से घनिष्ठ संबंध स्थापित हुआ। मध्य एशिया से भारत होते हुए एक व्यापारिक मार्ग गुजरता था जो चीन को रोमन साम्राज्य के पश्चिमी प्रान्तों से जोड़ता था। यह रेशम मार्ग था क्योंकि चीन से होनेवाला रेशम का व्यापार प्रायः इसी मार्ग से होता था । रोमन साम्राज्य से होने वाले व्यापार का एक बड़ा भाग इन्हीं क्षेत्रों से जुड़ा हुआ था। रोम भारत में निर्मित विलासिता की सामग्री जैसे–रेशम, मसाला, मोती, हाथी दांत से बने आभूषण आदि का एक बड़ा ग्राहक था ।

संगमकालीन व्यापार : दक्षिण भारत में दूसरी शताब्दी ई.पू. से लेकर तीसरी शताब्दी तक का काल संगम काल के नाम से जाना जाता है। इस दौरान दक्षिण भारत में व्यापक व्यापार वाणिज्य के प्रमाण मिलते हैं । संगम साहित्य के अनुसार यहाँ की भूमि काफी उर्वर थी। पर्याप्त मात्रा में अनाज, फल–फूल, मसाले, मांस एवं मछली यहां के लोगों को उपलब्ध थे। कृषि से प्राप्त राजस्व आय का प्रमुख स्रोत था, लेकिन आन्तरिक एवं विदेशी व्यापार संगमकाल की समृद्धि का मुख्य कारण था। कई बन्दरगाह वाले शहर व्यापार के केन्द्र थे, जिनमें पुहार भी एक था। सर्वाधिक लाभप्रद समुद्री व्यापार दक्षिण भारत से होनेवाला रोमन व्यापार था। दक्षिण भारत के तीनों राजवंश के शासकों–'चोल', 'पांड्य' और 'चेर' ने संगमकालीन व्यापार को काफी उन्नत बनाया ।

संगम काल :

'संगम' शब्द का तात्पर्य कवियों की सभा से है । दक्षिण भारत के शासक समय–समय पर तमिल कवियों की सभा आयोजित करवाते थे । इन कवियों का काम ऐसे साहित्य की रचना करना था जिससे तत्कालीन अर्थव्यवस्था, व्यापर तथा वाणिज्य एवं शिल्प आदि की जानकारी सभी को मिल सके । इनके द्वारा लिखे गए साहित्य से हमें सुदूर दक्षिण में तीन प्रमुख राज्यों पांड्य, चोल एवं चेर के उद्भव और विकास का विवरण प्राप्त होता है।

पुहार की व्यापारिक गतिविधियाँ— एक अवलोकन :

पुहार संगमकाल का काफी सुविधजनक बन्दरगाह था जो भारत के पश्चिमी तट पर स्थित था । यहाँ विदेशों के माल लेकर आने वाले बड़े—बड़े जहाज भी बिना पाल उतारे ही तट पर आ जाते थे । विदेशों से आयात होने वाली बहुमूल्य सामग्री गोदी बाड़े (डॉकयार्ड) पर उतारी जाती थी। विदेश से व्यापार के कारण पुहार के लोग काफी धनी हो गए थे । इस नगर में अनेक ऊँचे—ऊँचे और भव्य—भवन थे । ये भवन कई मंजिल वाले थे। इनमें अलग—अलग कक्ष थे। प्रत्येक भवन में गलियारे, बरामदे तथा अनेक कमरे होते थे। इन भवनों में ऊपर तो धनी व्यापारियों का परिवार रहता था और नीचे की मंजिल का उपयोग व्यापार के लिए होता था। समुद्र तट पर स्थित व्यापारी जहाजों पर ध्वज लहराते थे। इनके साथ विभिन्न रंगों के झंडे भी होते थे जो जहाजों पर लदे विशिष्ट प्रकार के माल तथा फैशन परस्तों के लिए उपयोगी सामान का एक प्रकार से विज्ञापन करते थे ।

क्या आपके गांव या शहर के व्यापारी भी इतने ही समृद्ध होते हैं जितने पुहार के व्यापारी थे ? इनकी समृद्धि के क्या कारण थे ?

संगमकालीन भारत के तटीय शहरों तोण्डी, मुजरिश, पुहार, अरिकमेडु में यवन व्यापारी काफी संख्या में रहते थे । ये लोग बोतल में शराब, विभिन्न प्रकार के दीपक एवं सोना लाते थे। इसके बदले ये लोग काली मिर्च एवं अन्य मसाले तथा समुद्र एवं पर्वत के प्राप्त दुर्लभ वस्तुओं को यहाँ से ले जाते थे । यहाँ हुई खुदाई में रोमन सुराहियों के टुकड़े, रोमन ताम्र सिक्के तथा ग्रेफाइट के चिह्नों वाले काले एवं लाल मिट्टी के बर्तन मिले हैं जिनसे हमें भारत का रोम के साथ व्यापार की जानकारी मिलती है। भारत द्वारा निर्यात किए गए सामान के बदले बड़ी मात्रा में सोने एवं चांदी के सिक्के भी यहां आते थे।

विनिमय के साधन सिक्के :

व्यापार—वाणिज्य में विकास के साथ ही विनियम (लेन—देन) के साधन के रूप में सिक्कों का प्रचलन बढ़ा। आप पिछले अध्यायों में संपत्ति और समृद्धि के प्रतीक के रूप में गाय को

देखे होंगे । पहले व्यापार में वस्तु–विनियम प्रणाली प्रचलित थी। लेकिन अब सिक्कों के आधार पर सम्पत्ति का मूल्यांकन किया जाने लगा । पहले असमान भारवाले तथा अमानकीकृत (आहत सिक्के) सिक्कों का उपयोग किया जाता था। परन्तु मौर्यों के बाद भरत में आन्तरिक और बाह्य व्यापार का व्यापक विकास हुआ । हिन्द–यूनानी शासकों ने सोने के सिक्कों को भारत में पहली बार जारी किया ।

आहत सिक्के – चाँदी या सोने के सिक्के पर राजकीय चिह्नों को आहत कर बनाए जाने के कारण इन्हें आहत सिक्का कहा जाता था।

कुषाण शासकों के समय सोने और चांदी के जो सिक्के जारी किए गए थे, उनका प्रचलन व्यापारिक कार्यों तक ही सीमित था। इन शासकों के द्वारा दैनिक कार्यों के उपभोग के लिए ताम्बे के सिक्के भी प्रचलन में लाए गए । पुरातत्वविदों को इस काल के सिक्के बड़े पैमाने पर मिले हैं । इन सिक्कों से हमें उसके जारी करने वाले शासकों के समय, व्यापार–वाणिज्य एवं आर्थिक समृद्धि की जानकारी मिलती है। सिक्कों पर शासकों, देवताओं आदि के चित्र अंकित रहने से उस काल के कलात्मक विकास की भी जानकारी हमें प्राप्त होती है । कुषाण शासक के सिक्कों पर बौद्धधर्म के चिह्न अंकित मिलते हैं। अतः ये सिक्के उस समय भी

आहत सिक्के

कुषाणकालिन सिक्के, सातवाहन सिक्के, शक सिक्के और हिन्द यवन सिक्के चित्र

आर्थिक संपन्नता एवं धर्मिक मान्यताओं पर भी प्रकाश डालते हैं ।

शहर की समृद्धि एवं शहर–विभिन्न गतिविधियों का केन्द्र

व्यापार–वाणिज्य के क्षेत्रों में अत्यध्कि विकास ने शहरों की समृद्धि को बढ़ाया । जातक कथाओं से हमें जानकारी प्राप्त होती है कि किस तरह लोग व्यापार के माध्यम से आर्थिक रूप से सम्पन्न होते जा रहे थे। शहर कई गतिविध्यिों के केन्द्र हुआ करते थे। वे शिल्पकला, व्यापार–वाणिज्य, धर्म शिक्षा आदि के केन्द्र के रूप में विकसित थे । इस समय उत्तरी भारत के प्रमुख नगर थे–तक्षशिला, कौशाम्बी, श्रावस्ती, हस्तिनापुर, मथुरा, वैशाली, पाटलिपुत्र, उज्जयिनी आदि। दक्षिण भारत में टगर, पैठन, धन्य कटक, अमरावती, अरिकमेडू आदि महत्वपूर्ण शहर थे ।

पाटलिपुत्र

विभिन्न गतिविध्यिों के केन्द्र के रूप में हम पाटलिपुत्र (पटना) का उदाहरण ले सकते हैं। यह महाजनपद काल से ही अर्थात् छठी शताब्दी ई.पू. से ही एक महत्वपूर्ण नगर रहा है। यहाँ यातायात के लिए दो तरह के साधन उपलब्ध थे–जलमार्ग और स्थल मार्ग। उत्तर–पश्चिम में तक्षशिला की ओर जानेवाला स्थलमार्ग पाटलिपुत्र से ही होकर जाता था। दूसरी ओर जलमार्ग द्वारा ताम्रलिपि (बंगाल) बन्दरगाह तक यहाँ से रास्ता जाता था । यह बर्मा और श्रीलंका के लिए प्रमुख बन्दरगाह था । शहर की चारों तरफ से किलेबन्दी की गयी थी। यहाँ बौद्ध भिक्षुओं को ठहरने के लिए कई संघाराम थे। वर्तमान पटना का भिखनापहाड़ी सम्भवतः किसी समय बौद्ध भिक्षुओं के ठहरने की जगह थी। पाटलिपुत्र राजकीय एवं लोककला के प्रसिद्ध केन्द्र के रूप में विकसित था। आसपास के किसान एवं पशुपालक अपने उत्पादन को बेचने शहर आया करते थे। पाटलिपुत्र हजारों वर्ष तक प्रशासनिक गतिविधि का प्रधान केन्द्र बना रहा । यहाँ बड़े–बड़े प्रशासनिक एवं सैन्य अधिकारी निवास करते थे जो उच्च वर्ग के आय समूह के लोग होते थे। इनकी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए कई प्रकार की सांस्कृतिक गतिविधियां विकसित की गयी थीं। इन अधिकारियों द्वारा मठों एवं मन्दिरों को दान

दिया जाता था। प्रायः शहर के राजा, रानी, बड़े–बड़े अधिकारी, धनी व्यापारी एवं शिल्पकार दान देते थे । स्रोतों से जानकारी मिलती है कि यहाँ अस्त्र–शस्त्रा बनाने वाले, रथ बनाने वाले रथकार, सोनार, लोहार, बुनकर, बढ़ई आदि निवास करते थे ।

हमें उस समय के गांवों के बारे में अपेक्षाकृत कम जानकारी प्राप्त है, क्योंकि उस समय के गांवों की खुदाई पुरातत्वविदों द्वारा शायद ही हुए हैं। फिर भी अभिलेखों एवं तत्कालीन साहित्यों से हमें गांवों के बारे में भी जानकारियां प्राप्त होती हैं।

मौर्योत्तर काल के सभी गांव एक समान नहीं थे। उनपर कहीं परिस्थिति एवं जलवायु का असर था तो कहीं सांस्कृतिक भिन्नता थी। पहाड़ी एवं वन्यप्रदेश के गांव दूर–दूर बसे थे एवं उनकी जनसंख्या विरल थी, जबकि गंगा घाटी के गांव घनी आबादी से युक्त थे। उत्तर भारत एवं दक्षिण भारत के गांव की प्रशासनिक संरचना ;स्थानीय प्रशासन थोड़ी भिन्न थी।

आइए देखें, गांवों का सामाजिक एवं प्रशासनिक स्तर कैसा था ?

गांव में सबसे प्रभावशाली व्यक्ति गांव का मुखिया होता था, जिसे 'ग्रामभोजक' भी कहा जाता था। यह पद वंशानुगत होता था। इसके पास गांव में सबसे अधिक भूमि होती थी । ये खेती करने के लिए दास या गुलाम (बन्धुआ मजदूर) रखते थे। ये राजा के लिए कर भी वसूलते थे तथा न्यायाधीश एवं पुलिस का भी काम करते थे।

छोटे स्तर के किसान, जिनके पास अपनी भूमि होती थी उसे 'गृहपति' कहा जाता था। गांव में कुछ ऐसे लोग भी रहते थे जिनके पास अपनी जमीन नहीं होती थी और वे दूसरों की जमीन पर मजदूरी करते थे। इस तरह के लोगों में दास, कर्मकार (शिल्पकार) आदि शामिल थे । दक्षिण भारत के बड़े किसानों को 'वेल्लाल' कहा जाता था । छोटे किसान 'उणवार' कहलाते थे । भूमिहीन मजदूर वर्ग एवं दासों को 'कडैसियार' और 'आदिमई' कहा जाता था । अधिकांश गांव जो बड़े–बड़े होते थे उनमें लोहार, कुम्हार, बढ़ई तथा बुनकर जैसे शिल्पकार भी होते थे ।

मौर्योत्तर कालीन भारत के भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में कई तरह के वस्तुओं का उत्पादन किया जाता था । कश्मीर, कोसल, विदर्भ और कलिंग हीरों के लिए विख्यात था, मगध वृक्ष के रेशों

से बने वस्त्रों के लिए और बंगाल मलमल के रेशों से बने वस्त्रों के लिए प्रसिद्ध था। कपड़ों के उत्पादन के लिए उत्तर में काशी एवं दक्षिण में मदुरै प्रमुख केन्द्र थे। यहाँ महिलाएँ भी काम करती थीं। विशेषकर सूत कातने का काम महिलाएं ही करती थीं।

इस काल में व्यापारी एवं शिल्पकार संगठित रूप से काम करने लगे थे। इनके अपने–अपने संघ थे जिन्हें श्रेणी कहा जाता था। श्रेणियों के द्वारा शिल्पकारों को प्रशिक्षण देने, कच्चा माल उपलब्ध कराने तथा तैयार माल का वितरण कराने का कार्य किया जाता था। श्रेणियाँ बैंक का भी कार्य करती थीं। जमा धन का निवेश लाभ के लिए किया जाता था। लाभांश का कुछ हिस्सा पैसा जमा करने वाले व्यक्ति को दिया जाता था। इसका कुछ हिस्सा धार्मिक संस्थाओं के विकास के रूप में भी दिया जाता था ।

इस तरह हम देखते हैं कि मौर्योत्तर कालीन भारत में राजनैतिक अस्थिरता के बावजूद भी कृषि एवं व्यापार में इतनी अधिक प्रगति हुई कि भारत यहाँ उत्पादित वस्तुओं एवं प्राप्त खनिजों को विदेशों में निर्यात करनेवाला देश बन गया। इसी क्रम में भारतीय धर्म एवं संस्कृति का विदेशी धर्म एवं संस्कृति के साथ समन्वय स्थापित हुआ। परिणाामस्वरूप सुदूर पूर्व के देशों के कला एवं साहित्य भी इससे प्रभावित हुए ।

जातक कथा – एक निर्धन की चतुराई

जातक कथाएँ आम लोगों में प्रचलित हैं, जिनका संकलन बौद्ध भिक्षुओं ने किया था। इस कथा में यह बताया गया है कि कैसे एक निर्धन व्यक्ति अपनी चतुराई से और व्यापार के माध्यम से धनी बन जाता है।

एक शहर में एक गरीब व्यक्ति था। उसके पास खाने के लिए पैसा नहीं था। उसने एक मरा हुआ चुहा देखा। उस चुहे को उठाकर उसने एक दुकान के मालिक को एक सिक्के में उसकी बिल्ली के लिए बेच दिया।

दुसरे दिन बड़ी जोरों की आँधी आयी। वहाँ के राजा का बागीचा टहनियों एवं पत्तों से भर गया। राजा का माली उसे साफ करने के लिए परेशान था। तभी इस व्यक्ति ने बगीचे की सफाई का काम माली से इस शर्त पर ले लिया की

बदले में माली सारी टहनियाँ एवं पत्ते उसे दे देगा। माली तुरंत तैयार हो गया। उसी समय पास में बहुत से बच्चे खेल रहे थे। व्यक्ति ने उन्हें मिठाई का लालच देकर टहनियों एवं पत्तों को बाहर रखने को कहा। देखते ही देखते बागीचा बिल्कुल साफ हो गया और टहनियाँ एवं पत्ते भी एक जगह जमा हो गया। तभी राजा का कुम्हार बर्त्तन पकाने के लिए ईंधन की तलाश में उधर से गुजर रहा था। उस चतुर व्यक्ति ने उन टहनियों एवं पत्तों को उसके हाथ बेच दिया, जिससे उसके पास कुछ पैसा इकटठ् हो गए।

उसके बाद उस व्यक्ति को एक चतुराई सूझी उसने एक बड़े बर्त्तन में पानी लेकर घास काटने वाले 500 व्यक्तियों को पानी पिलाया। उसकी सेवा भक्ति देखकर घास काटने वालों ने उससे कहा 'तुमने हमारी प्यास बुझाई बोलो हम तुम्हारे लिए क्या कर सकते हैं।' उस व्यक्ति ने जवाब दिया 'मैं आपको तब बताऊँगा जब मुझे आपकी सहायता की आवश्यकता होगी।'

चतुर व्यक्ति ने उसके बाद एक व्यापारी से दोस्ती करली। उस व्यापारी ने उसको बतायो की कल 500 घोड़ों के साथ एक बड़ा व्यापारी शहर में आ रहा है। तभी उस व्यक्ति ने घास काटने वालों के पास जाकर कहा 'कल तुम सभी मुझे एक–एक गट्ठर घास दे देना और तब तक अपनी घास मत बेचना जब तक मेरी पुरी घास नहीं बिक जाए। इस तरह उस व्यक्ति के पास 500 गठ्ठर घास जमा हो गए । जब घोड़े के व्यापारी का कहीं घास नहीं मिला तो उसने उस व्यक्ति से एक हजार सिक्के में इसके सारे घास खरीद लिए। इस तरह देखते ही देखते अपनी चतुराई से वह निर्धन व्यक्ति धनी बन गया।

बच्चों क्या आप बताएंगे कि घोड़ो का व्यापारी अपने 500 घोड़ों के साथ शहर क्यों आया होगा?

अभ्यास

आइये याद करें :

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

1. छोटे एवं स्वतंत्र किसानों को क्या कहा जाता था?

   (क) ग्राम भोजक (ख) श्रेणी

   (ग) गृहपति (घ) वेल्लार

2. संगमकालीन (दक्षिण भारतीय) सम्पन्न किसानों को क्या कहा जाता था।

   (क) ग्राम भोजक (ख) कडैसियार

   (ग) वेल्लार (घ) उणवार

3. सुदर्शन झील का निर्माण सबसे पहले किसने करवाया?

   (क) चन्द्रगुप्त मौर्य (ख) रुद्रदामन

   (ग) स्कन्द गुप्त (घ) अशोक महान

4. संगमकालीन व्यापारिक नगर कौन नहीं है?

   (क) पुहार (ख) उरैयूर

   (ग) तोण्डी (घ) कन्याकुमारी

आइये चर्चा करें :

6. लगभग 2500 साल पहले आन्तरिक व्यापार में कौन–कौन सी कठिनाई आती होगी?

7. आपके गांव में आज खेती कैसे की जाती है। प्रयुक्त होने वाले 5 औजारों के नाम लिखो।

8. आज सिंचाई की कौन–कौन सी पद्धति अपनाई जाती है। आप तुलना करें। प्राचीनकाल में आज की कौन सी पद्धति नहीं अपनाई जाती थी।

आइये करके देखें :

9. आप अगर शिल्पकार को काम करते हुए देखते हैं तो उनके बारे में लिखें कि वे कैसे काम करते हैं? उनके द्वारा बनाए गए पांच औजारों के नाम लिखें।
10. पाटलिपुत्र के लोग कौन–कौन से कार्य करते थे। गांवों के लोगों से उनका व्यवसाय किस प्रकार भिन्न था?
11. आप भारत से रोम को निर्यात एवं आयात होने वाली तीन–तीन वस्तुओं की सूची बनाएं।

वर्ग परिचर्या :

1. क्या राजा सिंचाई की व्यवस्था करके अधिक राजस्व प्राप्त करने का अधिकारी था?
2. गांव के लोगों का जीवन कैसा था?
3. पाटलिपुत्रा में लोग कौन–कौन से व्यवसाय से जुड़े हुए थे। आप उनकी सूची बनाइए।